



पाठ-बीस दहेज

नव-विवाहिता, लालची, बेरहमी, दहेज, शैतान, बदतर, ससुराल, कुप्रथा, गृहस्थाश्रम, जहर, क्षमता, रिवाज, रूढ़ी, प्रतिष्ठा, गिरवी, अत्याचार, बारात, बैरंग, जागरूक, कानून, हिचकिचाना।

- रोमा : थोड़ीबी, क्या तुमने आज के अखबार में एक नव-विवाहिता को जला कर मार डालने का समाचार पढ़ा ?
- थोड़ीबी : हाँ रोमा, पढ़ा। मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए। लालची लोगों ने कितनी बेरहमी से एक स्त्री की जान ले ली।
- रोमा : दहेज का लालच ऐसा ही होता है। आदमी को शैतान से भी बदतर बना देता है।
- थोड़ीबी : क्या तुम जानती हो, दहेज क्या है और इसका चलन कब से है ?
- रोमा : नहीं, हमारे समाज में यह बीमारी है ही, नहीं तो मैं कैसे जानूँगी। चलो, गुरुजी के पास चलकर पूछते हैं, उन्हें अवश्य पता होगा।
- थोड़ीबी :]
रोमा :] चलो, चलते हैं।
- थोड़ीबी : गुरुजी, क्या हम अन्दर आ सकते हैं ?
- गुरुजी : हाँ-हाँ, अवश्य आओ। कहो, क्या समस्या है ?
- रोमा : गुरुजी, थोड़ीबी दहेज के बारे में जानना चाहती है।
- गुरुजी : क्यों, क्या बात है ? आज अचानक तुम लोगों को दहेज के बारे में जानने की इच्छा क्यों जाग उठी ?

- थोइबी : गुरुजी, आज के अखबार में एक नव-विवाहिता को मार डालने का समाचार छपा है। उसे उसके ससुराल वालों ने दहेज के लालच में मार डाला। हम लोग तभी से अशान्त हैं।
- गुरुजी : तुम लोग अशान्त मत होओ। हमारा मणिपुरी समाज इस कुप्रथा से मुक्त है। यहाँ के समाज में स्त्रियों का बहुत ऊँचा स्थान है। उन्हें कोई जला कर नहीं मार सकता।
- रोमा : फिर भी, गुरुजी दहेज के बारे में जानकारी दीजिए। हम जानना चाहते हैं।
- गुरुजी : ठीक है। पहले दहेज का अर्थ समझो। उस धन-सम्पत्ति या सामान को दहेज कहा जाता है, जो विवाह के अवसर पर वर और कन्या को मिलता है।
- थोइबी : गुरुजी, स्पष्ट रूप से समझाइए।
- गुरुजी : समझाता हूँ। प्राचीन काल में आर्थिक साधन कम थे। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने पर वर-वधू के सामने आर्थिक समस्या आ खड़ी होती थी, इसीलिए विवाह के समय कन्या के पिता द्वारा कुछ धन या सामान दिया जाता था। इसे यौतक या गौतुक कहा जाता है।
- रोमा : वधू का पिता सामान भी देता है और ससुराल वाले वधू को ही जला कर या जहर देकर मार भी डालते हैं – यह बात एकदम समझ में नहीं आती।
- गुरुजी : इसका रहस्य भी समझाता हूँ। प्राचीन काल में कन्या का पिता अपनी इच्छा से और अपनी क्षमता के अनुसार धन या सामान देता था। जो नहीं दे पाता था, उससे कोई जबरस्ती नहीं करता था। धीरे-धीरे लालच ने अपना जाल फैलाया। दहेज ने रिवाज का रूप ले लिया और फिर यह रिवाज से रूढ़ि बन गया।
- थोइबी : उसके बाद क्या हुआ गुरुजी ?
- गुरुजी : उसके बाद दहेज लेना वर पक्ष का अधिकार माना जाने लगा। इसे सामाजिक प्रतिष्ठा से भी जोड़ दिया गया। जिसे विवाह में जितना अधिक दहेज मिलता, वह अपने को उतना ही बड़ा और सम्मानित आदमी समझता।
- रोमा : यह तो बहुत बुरी बात हुई।
- गुरुजी : तुम ठीक कहती हो। लड़की पैदा होते ही पिता को उसके पालन-पोषण और शिक्षा के बदले उसके विवाह और दहेज की चिन्ता खाने लगती है। कई बार दहेज के लिए घर-जमीन

गिरवी रख कर कर्ज लेना पड़ता है। तुम तो जानती हो, कर्ज की दलदल में एक बार जो फँसा, उसका सब कुछ लूट जाता है।

थोइबी : इतने पर भी ससुराल वाले अपनी ही बहू को मारने से बाज नहीं आते।

गुरुजी : इसके पीछे धन की भूख है। दहेज में चाहे जितना मिल जाए, पर और अधिक पाने की भूख बढ़ती ही जाती है। इसके चलते ससुराल के लोग बहू पर दबाव डालते हैं कि वह अपने पिता की मजबूरी के कारण ससुराल वालों की माँग पूरी करे। नहीं कर पाती तो वे उस पर तरह-तरह से अत्याचार करते हैं, यहाँ तक कि उसे मार डालने से भी नहीं हिचकिचाते।

रोमा : क्या दहेज का कोई विरोध नहीं करता ?

गुरुजी : अब कभी-कभी दहेज का विरोध भी सुनने को मिलने लगा है। विशेष रूप से, जो लड़कियाँ पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती हैं, उनमें से कुछ दहेज के लालची पुरुषों के साथ विवाह करने से इनकार कर देती हैं। कई बार दहेज की माँग के कारण बारात को बिना वधू के ही बैरंग लौट आना पड़ता है। धीरे-धीरे युवक-युवतियाँ दहेज के विरुद्ध जागरूक हो रहे हैं।

थोइबी : क्या सरकार दहेज जैसी बुराई समाप्त करने के लिए कुछ नहीं करती ?

गुरुजी : सरकार ने दहेज विरोधी कानून बनाया है। इसमें दहेज लेने वालों या दहेज के लालच में किसी स्त्री पर अत्याचार करने वालों के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था है।

रोमा :
थोइबी :] धन्यवाद गुरुजी ! आपने हमें दहेज के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी प्रदान की।

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

दहेज = वह दान, सामग्री आदि जो कन्या का पिता वर-पक्ष को देता है।

बेरहमी = निर्दयता, बेदरदी।

लालच = लोभ, कोई चीज पाने की बड़ी हुई इच्छा।

कुप्रथा	=	बुरी परिपाटी।
गृहस्थाश्रम	=	चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके घर बसाते हैं।
यौतक	=	दहेज, दुहिता धन।
प्रतिष्ठा	=	मान, मर्यादा, आदर।
कर्ज	=	ऋण, उधार।
गिरवी	=	बंधक, रेहन।
हिचकिचाना	=	मन का आगा-पीछा करना।
बारात	=	वर के साथ कन्या-पक्ष के यहाँ जाने वाले लोग।
बैरंग	=	जिसका महसूल भेजने वाले ने न चुकाया हो।
कानून	=	विधि, नियम।
दलदल	=	कीचड़, पंक।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) रोमा और थोडबी गुरुजी के पास क्यों गई ?
- (ख) दहेज क्या है ?
- (ग) यौतक किसे कहते हैं ?
- (घ) ससुराल वाले बधू को क्यों मार डालते हैं ?
- (ङ) दहेज कैसे रूढ़ि बन गया ?
- (च) दहेज लेने को सामाजिक प्रतिष्ठा से क्यों जोड़ दिया गया ?
- (छ) लड़की के पिता को किसकी चिन्ता आने लगती है ?
- (ज) लड़की के पिता को दहेज के लिए क्या करना पड़ता है ?
- (झ) ससुराल वाले बहू पर कैसा दबाव डालते हैं ?
- (ञ) कब बहू पर तरह-तरह से अत्याचार किए जाते हैं ?
- (ट) पढ़ी-लिखी लड़कियाँ कैसे दहेज का विरोध करती हैं ?
- (ठ) दहेज विरोधी कानून में कैसी व्यवस्था है ?
- (ड) आपके विचार में दहेज-प्रथा ठीक है या नहीं ? कुछ वाक्य लिखिए।
- (ढ) मणिपुर में प्रचलित दहेज के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

लालची	-----
बेहमी	-----
बदतर	-----
कुप्रथा	-----
रिवाज	-----
प्रतिष्ठा	-----
बैरंग	-----
अत्याचार	-----
जागरूक	-----
रूढ़ि	-----

4. वाक्य पूरा कीजिए :

(क) मणिपुरी समाज में स्त्रियों का	-----
(ख) प्राचीन काल में	-----
(ग) धीरे-धीरे लालच ने	-----
(घ) यहाँ तक कि उसे	-----
(ङ) कभी-कभी दहेज का विरोध	-----

5. तालिका को देखिए, ध्यान से पढ़िए और खण्ड “क” तथा “ख” के वाक्यांशों को सही ढंग से जोड़ कर लिखिए :

क	ख
लालची लोगों ने वर पक्ष का आज के अखबार में जो नहीं दे पाता था दहेज लेना दहेज की माँग के कारण	अधिकार माना जाने लगा। बेहमी से एक स्त्री की जान ले ली। बारात को बिना वधु के बैरंग लौट आना पड़ता है। एक नव-विवाहिता को मार डालने का समाचार छपा है। उससे कोई जबरदस्ती नहीं करता था।

6. सही कथन के आगे (✓) का निशान लगाइए :

- (क) मणिपुरी समाज दहेज की कुप्रथा से मुक्त है। ☐
- (ख) विवाह के वर और कन्या को दी जाने वाली धन-सम्पत्ति को दहेज कहा जाता है। ☐
- (ग) प्राचीन काल में कन्या का पिता अपनी इच्छा से धन नहीं देता था। ☐
- (घ) कर्ज की दलदल में एक बार जो फँसा, उसका सब कुछ लुट जाता है। ☐
- (ङ) आजकल कुछ लड़कियाँ दहेज के लालची पुरुषों के साथ विवाह करने से इनकार कर देती हैं। ☐

7. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

हमारे समाज में यह बीमारी है ही, कभी-कभी तुम पत्र लिखा करो तुम खूब पढ़ो, थोड़ा-थोड़ा खाया करो, समय पर आना टिकट लेकर सफर करो,	नहीं तो	मैं कैसे जानूँगी। मैं भी लिखना बन्द कर दूँगा। फेल हो जाओगे। बीमार पड़ जाओगे। गाड़ी छूट जाएगी। पकड़े जाओगे।
--	---------	---

8. वाक्य पूरा कीजिए :

- (क) सम्भल कर जाना, नहीं तो ----- |
(ख) सुबह जल्दी उठा करो, नहीं तो ----- |
(ग) कल तुम तुरन्त आओ, नहीं तो ----- |
(घ) आप जरूर आइए, नहीं तो ----- |
(ङ) दौड़ते-दौड़ते चलो, नहीं तो ----- |